शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३५ : नई दिल्ली : २-८ दिसम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी जसोल चतुर्मास सानंद परिसंपन्न कर टापरा की ओर विहार कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्यप्रवर बाडमेर सहित इसके पार्श्ववर्ती क्षेत्रों में विहरण करते हुए आगामी १८ जनवरी को असाढ़ा पधारेंगे। यहां वर्धमान महोत्सव का आयोजन है। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आगामी १ फरवरी को मर्यादा महोत्सव के लिए टापरा पधार जाएंगे।

समझो पापों को-१८

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--**'मिच्छत्तं परियाणामि, सम्मत्तं उवसंपज्जामि'**--मैं मिथ्यात्व का परित्याग करता हूं और सम्यक्त्व को स्वीकार करता हूं। अठारह पापों में अन्तिम पाप है--मिथ्यादर्शन शल्य पाप। अनेक लोगों का दृष्टिकोण मिथ्या हो सकता है। समग्र जीव जगत की दृष्टि से विचार किया जाए तो अनंत जीव ऐसे हैं, जो मिथ्यात्व से युक्त हैं और मैं तो सिद्धान्त के सन्दर्भ में यह कह सकता हूं कि हम सभी कभी न कभी मिथ्या दृष्टिकोण वाले ही थे। ऐसा कौन-सा मनुष्य है, जो अनंतकाल में सदा सम्यक्दृष्टि वाला था। मेरे खयाल में ऐसा कोई नहीं मिलेगा। कभी न कभी तो हर प्राणी मिथ्यादृष्टि संपन्न रहा है। आदमी का दृष्टिकोण आत्मा से जुड़ा हुआ है या पदार्थ जगत से जुड़ा हुआ है। आदमी तत्त्व को यथार्थ रूप में स्वीकार करता है अथवा अयथार्थ तत्त्व के प्रति आस्था रखता है। संस्कृत साहित्य में कहा गया--**अतत्त्वे तत्त्वश्रद्धा मिथ्यात्वम्।** जो तत्त्व नहीं है, उसे तत्त्व मान लेना मिथ्यात्व है। जैनधर्म में मिथ्यादृष्टि को त्याज्य तत्त्व माना गया है और सम्यक्त्वी बनने की कामना की गई है। यहां देव, गुरु, धर्म की त्रिपदी है। देव कौन, गुरु कौन और धर्म कौन-सा? इस प्रश्न के उत्तर में कहा गया--

अदेवे देवबुद्धिर्या, गुरुधीरगुरौ च या।
अधर्मे धर्मबुद्धिर्या, मिथ्यात्वं हि तदुच्यते।।

जो देव नहीं है, धर्म के क्षेत्र में उसे देव मान लेना, जो सुगुरु नहीं है, उसे गुरु मान लेना और जो धर्म नहीं है, उसको धर्म मान लेना मिथ्यात्व है। जैन वाङ्मय में पचीस बोल नामक एक छोटा-सा ग्रंथ है, जिसके तेरहवें बोल में दस प्रकार के मिथ्यात्व बताए गए हैं--धर्म को अधर्म मानना, अधर्म को धर्म मानना, मार्ग को कुमार्ग मानना, कुमार्ग को मार्ग मानना, जीव को अजीव मानना, अजीव को जीव मानना, साधु को असाधु मानना, असाधु को साधु मानना, मुक्त को अमुक्त मानना, अमुक्त को मुक्त मानना। आदमी का बिल्कुल सही श्रद्धान हो जाता है तो वह सम्यक् दृष्टिसंपन्न बन जाता है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि किसकी दृष्टि कहां टिकी हुई है? सुख में भी दुःख निकाला जा सकता है और दुःख में सुख को भी देखा जा सकता है। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी इस संदर्भ में एक कहानी फरमाते थे--

एक आदमी ने एक-एक रुपये में लॉटरी के दो टिकट खरीदे। संयोग की बात उसके एक टिकट पर एक लाख का ईनाम उठा। समाचार पत्रों में भी यह सूचना छप गई। उस व्यक्ति के जान-पहचान के लोग उसे बधाई देने उसके घर आए तो देखा वह शोकमग्न अपनी कोठरी में लेटा हुआ है। लोगों को आश्चर्य हुआ। लाख रुपये का ईनाम मिला और यह व्यक्ति मातम मना रहा है। उदास मन से वह उठा तो लोगों

ने कहा--'बधाई हो भाई, तुम लखपती बन गए। तुम्हें तो खुश होना चाहिए।' उसने उदास मन से कहा--'कैसी खुशी? मैंने तो घाटा उठाया है।' लोगों ने कहा--'घाटा कैसे?'

उस व्यक्ति ने कहा--'मैंने लॉटरी के दो टिकट खरीदे थे। ईनाम एक पर ही उठा। दूसरे टिकट का एक रुपया बेकार चला गया। इसका मुझे दुःख है।'

एक लाख मिलने का सुख नहीं, एक रुपया चले जाने का दुःख जिसे हो, उसे सुखी कौन बना सकता है? धन मिलने पर राजी होना और धन चले जाने पर दुःखी होना कोई साधना की बात नहीं है। यह एक स्थूल उदाहरण है कि आदमी सुख में से भी दुःख कैसे निकाल लेता है। अब इसका एक विपरीत उदाहरण देखें--

एक प्रबुद्ध आदमी जा रहा था। रास्ते में उसने एक विकलांग को देखा, जिसके न हाथ थे, न पांव। उसका एक सहयोगी हाथ ठेले पर बैठाकर उसकी सहायता करता था। हाथ-पैर से हीन उस व्यक्ति के चेहरे पर प्रसन्नता चमक रही थी। उसे प्रसन्न देख उस प्रबुद्ध व्यक्ति को आश्चर्य हुआ। उससे पूछे बिना रहा नहीं गया। कहा--'भाई, दुःख और उदासी स्वस्थ और सकलांग लोगों के चेहरों पर भी आ जाती है। तुम तो हाथ और पैरों से हीन हो, जीवन का एक बड़ा भाग अभी तुम्हारे सामने है, फिर भी तुम्हारे चेहरे पर निश्चिंतता और प्रसन्नता के भाव हैं, इसका राज क्या है?'

विकलांग व्यक्ति बोला--'महाशय! मेरे हाथ-पैर नहीं हैं तो क्या हुआ, देखने के लिए दो आंखें तो हैं, बोलने के लिए वाणी तो है, सुनने के लिए कान तो हैं और चिंतन-मनन के लिए स्वस्थ मस्तिष्क तो मेरे पास है। जब इतनी सारी अनुकूलताएं मुझे प्राप्त हैं तो एक-दो चीजों के अभाव पर मैं दुःखी क्यों बनूं? मुझे जितना भी प्राप्त है, उससे मुझे संतोष है और यही संतोष मुझे प्रसन्नता देता है।'

आदमी का जैसा चिंतन और दृष्टिकोण होता है, वह उसी रूप में आगे बढ़ता है। एक आदमी सोचता है इधर भी रात और उधर भी रात और बीच में सिर्फ एक दिन, काम कैसे पूरा हो। दूसरा आदमी सोचता है--इधर भी दिन और उधर भी दिन, बीच में सिर्फ एक रात, काम करने का कितना अवसर है। यथार्थ यह है कि एक दिन और एक रात का क्रम चलता है। कौन आदमी इसे किस रूप में लेता है और प्राप्त समय का कितना लाभ उठाता है, यह उसके चिंतन और दृष्टिकोण पर निर्भर है। संस्कृत साहित्य में एक श्लोक आता है। उसके साथ एक कहानी भी जुड़ी हुई है--

कस्त्वं लोहितलोचनास्यचरणो हंसः कुतो मानसात्,
कितत्रास्ति सुवर्णपंकजवनान्यम्भः सुधासन्निभम्।
मुक्ता शुक्तिरथास्ति शंखनिवहा वैडूर्यरोहाः क्वचित्,
शम्बूकाः किमु सन्ति नेति च बकैराकर्ण्य हिः हिः कृतम।।

एक बार मानसरोवर का राजहंस किसी तालाब पर चला गया। तालाब में बगुले थे। उन्हें अपने ही जैसे एक अपरिचित पक्षी को देखकर कुतूहल हुआ। परिचय की दृष्टि से उन्होंने कहा--'देखने में तो हमारे ही जैसे हो भाई, वैसे ही श्वेत पंख, लाल मुंह और लाल आंखें और वैसा ही कद। लेकिन हम तुम्हें यहां पहली बार देख रहे हैं। तुम कौन हो और कहां से आए हो?'

'मैं राजहंस हूं और मानसरोवर से आया हूं'--राजहंस ने उत्तर दिया।

'मानसरोवर इस सरोवर से बड़ा है क्या? उसमें क्या मिलता है?' बगुलों की जिज्ञासा बढ़ गई।

'मानसरोवर इससे बहुत बड़ा है। दुग्ध के समान धवल और मीठे पानी वाले उस सरोवर में स्वर्णकमल हैं, सीप, मोती, शंख और वैडूर्य मणि हैं।' राजहंस ने कहा।

बगुलों ने कहा--'जो चीजें तुमने गिनाईं, उनका उपयोग क्या है? मुझे तो यह बताओ कि मानसरोवर में उपयोगी घोंघे और मछलियां हैं या नहीं?'

राजहंस ने कहा--'घोंघे और मछलियां वहां नहीं होते।'

बगुलों ने एक स्वर से कहा--'मछलियां नहीं तो वह सरोवर किस काम का?'

हंस की दृष्टि मोती पर होती है और बगुलों की दृष्टि मछलियों पर। समान रंग-रूप के होते हुए भी दोनों की वृत्ति में कितना बड़ा अन्तर होता है। यही अन्तर आदमी-आदमी के बीच में भी होता है। एक आदमी का दृष्टिकोण आत्मकल्याण पर टिका होता है, साधना पर टिका होता है, अहिंसा, सचाई, ईमानदारी और संयम पर टिका होता है और दूसरे आदमी का दृष्टिकोण शरीर के आसपास सीमित रहता है। वह असत्य, हिंसा, चौर्यवृत्ति और छल-कपट में रस लेता है। दोनों में बहुत अन्तर है। कहा गया है--यादृशी दृष्टिः तादृशी सृष्टिः। आदमी की जैसी दृष्टि होती है, उसके लिए सृष्टि वैसी बन जाती है। मुझे अपने बाल्यकाल की स्मृति हो रही है, सरदारशहर में कुछ अवसरों पर मेले लगते थे। उन मेलों में जाने के लिए बच्चों में बहुत उत्साह रहता था। बच्चे वहां खिलौनों के साथ रंगीन चश्मे भी खरीदते थे। उन रंगीन चश्मों में खास बात यह होती थी कि जिस रंग का चश्मे का कांच होता था, वही रंग चश्मा लगाने वाले को दिखाई देता था। कहते हैं जिसे पीलिया रोग हो जाता है, उसे हर चीज पीले रंग की दिखाई देने लगती है। यही बात दृष्टिकोण के बारे में भी लागू होती है। आदमी का जैसा दृष्टिकोण होता है, उसे हर चीज वैसी ही दिखाई देती है।

दृष्टि यथार्थपरक होनी चाहिए। जो जैसा है, उसे वैसा ही देखना चाहिए। हर चीज को अलग-अलग चश्मे से देखने की जरूरत नहीं। दृष्टि कमजोर होने पर पावर का चश्मा लगाना अलग बात है, पर दुनिया को रंगीन देखने के लिए रंगीन चश्मा क्यों लगाया जाए? दुनिया जैसी है, उसे उसी रूप में देखने का प्रयास हो। जो चीज जैसी नहीं है, उसे वैसी मान लेना मिथ्यात्व है, जबकि तत्त्व को यथार्थ रूप में स्वीकार करना सम्यक्त्व है। यथार्थपरक दृष्टिकोण सम्यक दृष्टिकोण है। अध्यात्म साधना के क्षेत्र में सम्यक्त्व का बड़ा महत्त्व है। सम्यक्त्वी है तो मानना चाहिए कि नींव मजबूत है। अंक एक के आगे शून्य लगेंगे तो संख्या बढ़ती जाएगी, लेकिन अंक के बिना लाखों शून्य का भी कोई महत्त्व नहीं। सम्यक्त्व मूल अंक के समान है। उसके साथ साधनारूपी शून्य उसके महत्त्व को बढ़ाता है।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने 'जैन सिद्धान्त दीपिका' में सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, आश्रव, संवर आदि का सुन्दर विश्लेषण किया है। हमारा तात्विक ज्ञान स्पष्ट हो जाए तो साधना की अनेक बातें समझ में आ सकती हैं। हमारे यहां की तो यह विधि है कि किसी को दीक्षा देने से पहले उसे नवतत्त्व का ज्ञान होना जरूरी माना जाता है। नवतत्त्व को जो नहीं जानता, वह दीक्षा का अधिकारी नहीं हो सकता। वैरागी को नवतत्त्व की जानकारी इसलिए आवश्यक है, जिससे उसे मौलिक तत्त्वज्ञान प्राप्त हो जाए। यदि मूल तत्त्वज्ञान ठीक है, आचार के बारे में सम्यक ज्ञान है, उसके प्रति श्रद्धा है, निष्ठा है, रुचि है तो आचार का सम्यक परिपालन हो सकता है।

विद्यार्थी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करते हैं। वहां लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है, उसका अपना महत्त्व है। विद्यार्थियों को इतिहास, भूगोल, खगोल, गणित, अर्थशास्त्र आदि विषय पढ़ाए जाते हैं। सांसारिक और सामाजिक जीवन में इन विषयों का बोध होना अपेक्षित है। लेकिन लौकिक विद्या के साथ-साथ उन्हें अलौकिक-अध्यात्म विद्या भी प्राप्त हो जाए तो विद्यार्थियों का बड़ा भला हो सकता है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने जीवनविज्ञान की बात बताई। जीवन विद्यासंपन्न ही नहीं, श्रुतसंपन्न और शीलसंपन्न भी होना चाहिए। बौद्धिक ज्ञान आवश्यक है, किन्तु उसके साथ भावात्मक विकास की प्रवृत्ति भी होनी चाहिए, इमोशनल डवलपमेंट भी होना चाहिए। इन्टेलेक्चुअल डवलपमेंट भी वांछनीय है, फिजिकल डवलपमेंट भी वांछनीय है और मेंटल डवलपमेंट की भी अपेक्षा रहती है। ये चारों विकास विद्यार्थी के व्यक्तित्व को समग्रता प्रदान करते हैं।

बुद्धि का विकास अच्छी बात है। बुद्धि की स्फुरणा बड़ा काम संपादित करती है। लेकिन बुद्धि के

साथ शुद्धि का विकास भी होना चाहिए, दृष्टिकोण की समीचीनता और सम्यकता भी होनी चाहिए। बुद्धि के साथ समीचीन दृष्टि और भावात्मक शुद्धि का योग हो जाए तो जीवन की पूर्णता का निर्माण हो सकता है। विद्यार्थी को केवल बाह्य ज्ञान हुआ, उसमें नैतिक और चारित्रिक मूल्यों का विकास नहीं हुआ तो एक बड़ी कमी रह जाती है। एकांगी विकास उसे जीवन में भटका भी सकता है। इसलिए आवश्यक है बालपीढ़ी और युवापीढ़ी के सम्यक विकास के लिए उनमें प्रारंभ से ही श्रुत, शील और चारित्रिक विकास का प्रयत्न हो। इससे समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण भी संभव हो सकेगा।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

मन सुमन हो, दुर्मन नहीं

२० नवम्बर। आज प्रातः आचार्यप्रवर शहर में स्थित नवकार विद्या मंदिर में पधारे। वहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा अणुव्रत गीत को प्रस्तुति दी गई। स्कूल के अध्यक्ष श्री अशोक डोसी चोपड़ा, मंत्री श्री महेन्द्र भुटाणी, पूर्व अध्यक्ष श्री डूंगरचन्द सालेचा ने अपने विचार रखे। आचार्यवर ने अपने उद्‌बोधन में विद्यार्थियों के जीवन में ज्ञान और सदाचरण के विकास पर बल दिया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अध्यात्म जगत का महत्त्वपूर्ण शब्द है--बंध। बंध और मोक्ष में अध्यात्म का समग्र रहस्य समाहित है, ऐसा लगता है। अनंतानंत काल से हमारी आत्मा की संसार यात्रा चल रही है। आत्मा की इस यात्रा का कोई आदि बिन्दु नहीं है। बंध के कारण जीव संसार में परिभ्रमण करता है। पुनर्जन्म भी कर्म से होता है। बंधन का प्राणतत्त्व है कषाय। कषाय के बिना आत्मा के साथ बंधन अधिक टिक नहीं सकता। क्रोध, मान, माया व लोभ--ये कषाय के चार आयाम हैं।' बंध के चार प्रकारों--प्रकृति, स्थिति, अनुभाग व प्रदेश की विशद व्याख्या करते हुए पूज्यवर ने कहा--'हम साधना इसलिए करते हैं, जिससे आत्मा निर्बन्ध बन जाए। कर्म से आबद्ध आत्मा अपने मूल स्वरूप में नहीं आ सकती। अध्यात्म के अभ्यास से बंधनमुक्ति की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'भावों के साथ कर्म बंधन का स्वरूप निश्चित होता है। हमारे भीतर विरक्ति व मंगल की भावना है, वह मोक्ष की ओर ले जाती है। राग-द्वेष, घृणा, आसक्ति बंधन की ओर उन्मुख करते हैं। गृहस्थ अपने पास अटैची रखते हैं। अटैची पास में रखना इतना बंधन नहीं है, पर अटैची के प्रति अटैचमेंट हो तो वह बंधन का हेतु बन जाता है। हमारा मन सुमन रहे, दुर्मन न रहे। सुमन-फूल जैसा मन हो। काय व वचन गौण है, पर बंधन व मुक्ति में मन राजा है। चिन्ता करें तो मनोयोग की करें। हमारा मन कल्याणकारी संकल्पों में लगे। केवल सपने पूरे नहीं होते, संकल्प पूरे होते हैं। सपनों के साथ संकल्प की युति हो तो वह सपना आकार ले सकता है। संकल्प यदि असमीचीन हो जाए तो दिशा गलत भी हो सकती है।'

संकल्प जागरण की प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'प्रत्येक व्यक्ति में सत्संकल्प का बल आविर्भूत हो। व्यक्ति के भीतर अनंत शक्ति है। उस शक्ति का कुछ अंश जाग जाए और उसका सम्यक् उपयोग हो तो मंजिल प्राप्त हो सकती है। बंधन की आत्मा कषाय है, अटैचमेंट है। समत्व योग साधना है। इससे अटैचमेंट को न्यून व खत्म किया जा सकता है। विलासिता एवं आसक्ति से मन को हटाएं तथा अटैचमेंट से डिटेचमेंट की ओर आगे बढ़ें।'

इचलकरंजी से समागत सौ व्यक्तियों के संघ की ओर से सभा के मंत्री श्री पुष्पराज संकलेचा ने आचार्यवर के इचलकरंजी पदार्पण व साधु-साध्वियों के चातुर्मास की प्रार्थना की। अणुव्रत अन्तर्राष्ट्रीय अभियान की अब तक की उपलब्धियों के विवरण, प्रवृत्तियों तथा परियोजनाओं पर निर्मित दो लघु पुस्तिकाएं डा. सोहनलाल

गांधी और श्री नरेश मेहता ने आचार्यवर को भेंट की।

पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के संदर्भ में अणुव्रत आन्दोलन का प्रसार मुख्य उपक्रम है। जैसा मैंने जाना है, अणुव्रत का जो अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप निर्मित हुआ है, उसमें सोहनजी गांधी का बड़ा योगदान है। आचार्य तुलसी के युग से मैं देखता आया हूं भारत में कई अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस हुईं। विदेश में आयोजित कई कान्फ्रेंसों में अणुव्रत का प्रतिनिधित्व हुआ है। उसमें सोहनलालजी विशेष सक्रिय रहे हैं। अणुव्रत के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप का इतिहास लिखा जाए तो उसमें श्री सोहनजी गांधी का नाम प्रमुखता से रह सकता है। इनका अंग्रेजी भाषा का भी अच्छा अभ्यास है। जयपुर के श्री नरेश मेहता कितनी बार दर्शन कर लेते हैं। इनका कार्य के प्रति रुझान है।'

इस अवसर पर मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक वक्तव्य हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

व्यापारी सम्मेलन

मध्याह्न में आचार्यवर की सन्निधि में व्यापारी सम्मेलन का समायोजन हुआ। सम्मेलन में आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। लघु उद्योग मंडल के अध्यक्ष श्री डूंगरचन्द सालेचा ने आभारज्ञापन किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'व्यापार में दो दृष्टियां होती हैं--जनता की आवश्यकता की संपूर्ति करना और अर्थार्जन की शुचिता का ध्यान रखना। व्यापार में नैतिकता व शुचिता बनी रहे। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन नैतिकता सिखाता है। व्यापार में पवित्रता बनी रहे।' आचार्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को नशामुक्त रहने की प्रेरणा प्रदान की। मुनि जिनेशकुमारजी ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में बालोतरा उद्योग मंडल के अध्यक्ष श्री रूपचन्द सालेचा व अन्य अनेक पदाधिकारी सहित बड़ी संख्या में व्यापारी उपस्थित थे।

सुख में भी जागरूक रहें

२१ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में पुण्य का बहुत प्रभाव होता है। यदि व्यक्ति के पास पुण्य का बल न हो तो अच्छा कुल, बल, प्रतिष्ठा, धन-वैभव आदि की प्राप्ति संभव नहीं होती। धार्मिक क्रिया के द्वारा निर्जरा के साथ पुण्य का बंध होता है। अनुकूल स्वजन, परिवार में शान्ति, राज्य आदि पुण्योदय के बिना प्राप्त नहीं हो सकते। पुण्य के प्रभाव से व्यक्ति को सुमधुर वाणी, शारीररिक स्वास्थ्य, सज्जनता, शालीनता, तीक्ष्ण बुद्धि आदि की प्राप्ति होती है। व्यक्ति पुण्योदय के दिनों में भी प्रमाद में न जाए, जागरूक रहे, सत्ता, संपत्ति आदि का दुरुपयोग न करे।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। बेंगलुरु से समागत तीन सौ व्यक्तियों के संघ की ओर से तेरापंथी सभा बेंगलुरु के अध्यक्ष श्री हेमराज सामसुखा, मंत्री श्री मोतीलाल बाफणा, संगठन मंत्री श्री प्रेमराज चावत, श्री सुशील चोरड़िया, श्री ललित मांडोत ने अपने भावोद्गार व्यक्त किए। श्रावक-श्राविकाओं ने गीत के माध्यम से पूज्य चरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

गत अनेक दिनों से पूज्यवर द्वारा गांव के घरों में चरणस्पर्श का क्रम चल रहा था। आज प्रातः वह क्रम परिसंपन्न हुआ। पूज्यवर ने सभी जैन घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। अनेकानेक जैनेतर परिवार भी आचार्यवर की इस अनुग्रहवृष्टि में अभिस्नात् हुए। आचार्यवर के इस श्रमपूर्ण अनुग्रह को प्राप्त कर श्रद्धालु परम धन्यता की अनुभूति कर रहे थे।

जैसी भावना, वैसा कर्मबंध

२२ नवम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के जीवन में पुण्य का प्रभाव होता है तो पाप का भी अपना प्रभाव होता है। जो जैसा करता है, उसी के अनुसार उसे फल मिलता है। जीवन में जब पाप का उदय होता है तो प्रतिकूलता प्राप्त होती है। पाप कर्मों से छुटकारा पाने के लिए भावों में अहिंसा, मैत्री आदि का विकास आवश्यक है। कर्म का संबंध हमारी भावना के साथ है। जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है। एक बिल्ली अपने बच्चे को मुंह में दबाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती है और उसी मुंह से वह चूहे को भी पकड़ती है, लेकिन बिल्ली की इस क्रिया में कितना अन्तर है। डाकू और हत्यारे भी पेट को चीरते हैं और शल्य चिकित्सक भी पेट को चीरता है। क्रिया समान होने पर भी भावना और लक्ष्य में बड़ा अन्तर है। व्यक्ति यह चिंतन करे कि पाप कर्मों से कितना बचा जा सकता है। हमारे मन में प्राणिमात्र के प्रति मंगल मैत्री की भावना रहे। मन की निर्मलता के द्वारा पाप कर्मों से बचा जा सकता है।'

पूज्यवर ने अगे कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। विभिन्न प्रान्तों की यात्रा कर जनता को अहिंसा और नैतिकता का सन्देश दिया। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति को गलत कार्यों से बचने की प्रेरणा देते हैं। अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्व भारती, अणुव्रत न्यास और अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान अपने ढंग से अणुव्रत के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहे हैं। व्यक्ति अणुव्रत को अपना कर सदाचार के पथ पर अग्रसर हो सकता है।'

कार्यक्रम में अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रधान न्यासी श्री धनराज बोथरा ने न्यास द्वारा इन्दोर में समायोजित नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के फाइनल राउण्ड के विषय में अवगति देते हुए डा.गौतम कोठारी द्वारा संपादित 'चौथा प्रहरी' पत्र का विशेषांक आचार्यवर को भेंट किया। श्रीमती साधना कोठारी ने विचाराभिव्यक्ति की। अणुव्रत समिति, नोखा की ओर से विद्यार्थी अणुव्रत के ४५१ तथा शिक्षकों व अन्य प्रबुद्धजनों द्वारा भरे गए १५१ संकल्पपत्र पूज्यवर को भेंट किए गए।

प्रगति हो अध्यात्म की दिशा में

२३ नवम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने प्रातःकालीन मंगल प्रवचन में आश्रव तत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा--'जन्म-मरण की परम्परा का मुख्य कारण है--आश्रव। यह कर्मों के आने का द्वार है। पाप और आश्रव का परस्पर गहरा संबंध है। आश्रव कारण है और पाप कार्य है। कारण के बिना कार्य नहीं होता। कारण दो प्रकार के होते हैं--उपादान कारण और निमित्त कारण। उपादान मूल और निमित्त सहायक कारण होता है। आश्रव तत्त्व पुण्य और पाप दोनों का कारण है। पांच आश्रवों में मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद और कषाय--ये चार नितान्त पाप हैं। योग आश्रव के दो प्रकार हैं--शुभ और अशुभ। अशुभ योग पाप का बंध करता है, जबकि शुभ योग से निर्जरा और उसके साथ पुण्य का बंध भी होता है। कषायमंदता के अभ्यास के द्वारा अशुभ का निरोध किया जा सकता है। व्यक्ति यह चिंतन करे कि मैं कषायमंदता के प्रति कितना जागरूक हूं। कषायमंदीकरण के अभ्यास के द्वारा अध्यात्म की दिशा में प्रगति की जा सकती है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के पश्चात मुनि जयकुमारजी की संसारपक्षीया मां **कमलादेवी गोठी (टापरा)** की श्रद्धा-भक्ति का उल्लेख करते हुए उन्हें **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समायोजन

२४ नवम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में प्रेक्षा फाउण्डेशन जैन विश्वभारती द्वारा १८-२५ नवम्बर तक अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समायोजन हुआ। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में यूक्रेन से समागत श्री एलेक्जेंडर सारिमसाकोव, मास्को के श्री डेनियल सास्तकोवास्की, स्विट्जरलैंड से समागत डॉ. शालिनी संघवी, रोस्तोव की नतालिया सोकोलोवा ने शिविरकालीन अनुभवों को प्रस्तुति दी। कुर्गन प्रेक्षा ग्रुप ने 'प्रेक्षा गीत' और 'मंगलभावना' का संगान किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संपिक्खए अप्पगमप्पएणं--स्वयं के द्वारा स्वयं को देखो--यह सूत्र प्रेक्षाध्यान का आधारभूत तत्त्व है। व्यक्ति दूसरे को देखता है। यह अपेक्षित भी होता है। किन्तु हमें अपने आप को नहीं भूलना चाहिए। शरीर पर ध्यान दिया जाता है, उसका भरण-पोषण किया जाता है। किन्तु हमें अपनी आत्मा को विस्मृत नहीं करना चाहिए। कई बार व्यक्ति शरीर की देखभाल में उलझ कर आत्मा को विस्मृत कर देता है। प्रेक्षाध्यान कहता है कि आत्मा को भूलो मत, चेतना के प्रति जागरूक रहो। हम ध्यान के द्वारा भीतर की दुनिया को देखने का प्रयास करें। हमारे भीतर अनंत ज्ञान, अनंत आनंद और अनंत शक्ति है। हम उसका अनुभव करने का प्रयास करें। ध्यान के द्वारा इनका साक्षात्कार किया जा सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'प्रेक्षाध्यान एक आध्यात्मिक विद्या है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रसाद से इसका प्रादुर्भाव हुआ। विगत अनेक वर्षों से विदेशी लोग बड़ी संख्या में प्रेक्षाध्यान शिविर में संभागी बन रहे हैं। इनका इतनी बड़ी संख्या में भाग लेना उल्लेखनीय बात है। मैं इन विदेशियों को देखता हूं तो लगता है कि बड़े भले लोग हैं, मानो जल्दी मोक्ष में जाने लायक लोग हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें अध्यात्म की पिपासा है, ज्ञान की जिज्ञासा है। इतने दिनों तक एक स्थान पर रह कर साधना करना एक अच्छा उपक्रम है।'

प्रेक्षाध्यान के पांच सूत्रों की चर्चा करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'भावक्रिया, मैत्री, मिताहार, मितभाषण और प्रतिक्रियाविरति--ये पांच सूत्र जीवन में आ जाते हैं तो मानना चाहिए कि ध्यान जीवन में फलीभूत हो गया। व्यक्ति के मन में यह भावना रहनी चाहिए कि मेरी अगली गति खराब न हो, इसलिए मैं इस जन्म में सदाचरण करूं। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों के द्वारा आधि, व्याधि और उपाधि को दूर कर समाधि का वरण किया जा सकता है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया। कार्यक्रम में रापर-कच्छ क्षेत्र के विधायक, गुजरात के पूर्व वित्तमंत्री और पूर्व सांसद श्री बाबूलालजी मेघजी शाह ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। श्री घेवरचन्द मेहता ने भी अपने विचार रखे।

प्रेक्षा फाउण्डेशन की ओर से अष्टदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में बारह भारतीयों सहित रूस, यूक्रेन, कजाकिस्तान और स्विट्जरलैंड के ७१ व्यक्ति संभागी बने। संभागियों को परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रतिदिन प्रेक्षाध्यान आदि के लिए समय प्रदान किया। इसके अतिरिक्त शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि जयकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी, साध्वी आरोग्यश्रीजी, साध्वी प्रसन्नयशाजी, साध्वी वर्धमानयशाजी, समणी ज्योतिप्रज्ञाजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी, समणी शारदाप्रज्ञाजी, समणी कंचनप्रज्ञाजी, श्री रणजीत दूगड़, इलिया गोरोलोव (रूस) ने प्रशिक्षण दिया।

रूस से समागत शिविरार्थियों ने पूज्यप्रवर से अपने देश में पदार्पण की प्रार्थना भी की। पूज्यप्रवर ने नए संभागियों को आध्यात्मिक नाम भी प्रदान किए। इंजीनियर, डॉक्टर, प्रिंसिपल, उद्योगपति, प्रोग्रामर आदि विभिन्न पेशों में कार्यरत विदेशी इस शिविर में संभागी बने। उल्लेखनीय है--पूज्यवर की पावन सन्निधि में प्रतिवर्ष समायोजित होने वाले इस शिविर में बड़ी संख्या में विदेशी संभागी बनते हैं। प्रेक्षाध्यान प्रविधि से होने वाले लाभ उन्हें बार-बार भारत आने हेतु प्रेरित करते ही हैं, जैनधर्म की पवित्रता और सहजता भी

उन्हें यहां आने के लिए आकृष्ट करती है। यहां प्रशिक्षण प्राप्त कर अनेक लोग नियमित रूप से स्वयं प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करते हैं तथा अपने-अपने क्षेत्रों में प्रेक्षा प्रशिक्षक के रूप में भी कार्य कर रहे हैं। रूस और उसके पार्श्ववर्ती कजाकिस्तान, यूक्रेन आदि विभिन्न देशों में प्रेक्षाध्यान के अनेक केन्द्र संचालित हैं।

समता से परिवार में शान्ति संभव

२५ नवम्बर। प्रातःकालीन चातुर्मासिक रविवारीय प्रवचन श्रृंखला के अन्तर्गत 'मूल्य धर्म का' विषय पर मंगल प्रवचन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'धर्म अमूल्य होता है। इसे खरीदा नहीं जा सकता। अर्थ से धर्म का मूल्य आंका नहीं जा सकता। हमारी आत्मा अनंतकाल से मलिन बनी हुई है। इसे पवित्र और उज्ज्वल बनाने का एकमात्र उपाय है--धर्म। आत्मा के निर्मल बनने से व्यक्ति सुख का अनुभव करता है। दुःख का कारण है चेतना की मलिनता। जब चेतना सर्वथा विशुद्ध हो जाती है तो वह समस्त दुःखों से मुक्त होकर मोक्ष में अवस्थित हो जाती है।'

समता को धर्म का प्रतिनिधित्व करनेवाला शब्द बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'जीवन में समता का भाव प्रस्फुटित हो जाता है तो मानना चाहिए कि व्यक्ति के जीवन में धर्म अवतरित हो गया। व्यक्ति के मन में राग-द्वेष की भावना है, व्यवहार में पक्षपात है और जीवन में समता का भाव नहीं है तो उसके पारिवारिक जीवन में वैषम्य उत्पन्न हो सकता है। व्यक्ति परिवार व समाज में जीता है। यदि उसका क्रोध और आवेश पर नियंत्रण नहीं है और वाणी में माधुर्य नहीं है तो वह परिवार और समाज में सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता। समता से समाज में अहिंसा का विकास होगा। समता के बिना परिवार में भी शांति संभव नहीं। सामाजिक संदर्भों में देखा जाए तो जिस समाज के लोग सामाजिक धन का दुरुपयोग करते हैं, एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या-द्वेष का भाव रखते हैं, वह समाज विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। समाज में यदि एक-दूसरे के प्रति प्रमोद भावना है, प्रोत्साहन है तो वह समाज प्रगति कर सकता है। आत्मविकास धर्म से ही होता है, इसलिए सभी धर्म-साधना करने का प्रयास करें, यह वांदनीय है।'

जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री मोहनसिंह भण्डारी का पिछले दिनों देहावसान हो गया। उनके संबंध में मंत्री मुनिश्री, पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री राजेश बालिया, पूर्व सत्र न्यायाधीश श्री गणपतसिंह भण्डारी व श्री अशोक भण्डारी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने स्वर्गीय मोहनसिंह भण्डारी के सन्दर्भ में कहा--'व्यक्ति जीवन कैसे जीता है, यह महत्त्वपूर्ण व विचारणीय बात है। जीवन मूल्यपरक व पवित्रता के साथ जीया जा सकता है। मोहनसिंहजी भण्डारी सुशिक्षित व्यक्ति थे। जैविभा विश्वविद्यालय के वे कुलपति भी बने। उनका जैविभा से जुड़ाव रहा था। जब समणी मंगलप्रज्ञाजी वी.सी.थीं, उस समय भी उनका परामर्श मिलता रहा। धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण मंच तेरापंथ विकास परिषद से भी संभवतः उनका जुड़ाव था। मैं भूल न करूं तो आचार्य महाप्रज्ञ का विचार था कि भण्डारीजी को तेरापंथ विकास परिषद का संयोजक बना दिया जाए। संभवतः उनकी इच्छा नहीं होने से यह विचार स्थगित कर दिया गया। मूल बात यह है कि उनके प्रति गुरुदेव के मन में कितना विश्वास था। वे स्पष्ट वक्ता व चिंतनशील व्यक्ति थे। पाली में जैविभा मान्य विश्वविद्यालय से संबंधित मीटिंग में आए थे। वे राजकीय सेवा से भी जुड़े हुए थे। लेकिन ये सारी बातें गौण हैं। आदमी का चरित्र कैसा है, यह बड़ी बात होती है। जैसा मैंने जाना व सुना, उनमें प्रामाणिकता का संस्कार था। यह उनके जीवन की संपदा थी। मोहनसिंहजी भण्डारी के देहान्त से समाज का एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति चला गया, ऐसा माना जा सकता है। उनकी आत्मा आध्यात्मिक उन्नति करती रहे।'

श्रीमती मीरा अग्रवाल (बालोतरा) ने इस चतुर्मास की पांचवीं अठाई का प्रत्याख्यान किया। पाली तेरापंथ भवन में सन १९९० से सामायिक मंडल द्वारा चलाए जा रहे सामायिक अभियान के लेखाजोखा का रजिस्टर श्री राणमल मेहता ने भेंट किया।

मध्याह्न में वीतराग समवसरण में आचार्यवर की पावन सन्निधि में अठाई व इससे अधिक तपस्या करने वाले लगभग ४७४ तपस्वी श्रावक-श्राविकाओं में से उपस्थित तपस्वियों का प्रवास व्यवस्था समिति, जसोल द्वारा मोमेंटो प्रदान कर सम्मान किया गया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन में कहा--'तपस्या एक विशेष साधना है। तप के साथ ज्ञान, स्वाध्याय व कषाय मंदता का अभ्यास चले, जिससे जीवन का विकास हो।'

मुनि जिनेशकुमारजी, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री राजेश वालिया, प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतम सालेचा, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री खूबचन्द भंसाली ने अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री जसराज बुरड़, श्री गौतम सालेचा द्वारा तपस्वियों को मोमेंटो प्रदान किए गए। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत गीत से हुआ।

जीवनविज्ञान दिवस का आयोजन

२६ नवम्बर। आचार्यश्री महाप्रज्ञ को आज के दिन गुरुदेव तुलसी ने **'महाप्रज्ञ'** अलंकरण प्रदान किया था। इस उपलक्ष्य में आयोजित 'जीवन विज्ञान दिवस' के संदर्भ में प्रातः बालोतरा व जसोल की दस स्कूलों के लगभग आठ सौ विद्यार्थियों की भव्य रैली निकली। एस.एन.बोहरा सीनियर सेकेंड्री स्कूल से जसोल के मुख्य मार्गों से होती हुई रैली अणुव्रत व जीवनविज्ञान संबंधी नारे लगाती हुई वीतराग समवसरण में पहुंची। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि नीरजकुमारजी ने 'जीवनविज्ञान गीत' का संगान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में जीवनविज्ञान दिवस की पृष्ठभूमि पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा--'आचार्य तुलसी ने जो 'महाप्रज्ञ' संबोधन प्रदान किया, आगे जाकर वही संबोधन आचार्य महाप्रज्ञ का नाम बन गया। जीवनविज्ञान शिक्षा जगत से संपृक्त उपक्रम है। विद्यार्थियों में अच्छे संस्कारों का निर्माण हो। बच्चों में यह भाव भी रहे कि अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए नकल का सहारा नहीं लेंगे। विद्यार्थी नशे से भी दूर रहें। इस दृष्टि से आज का दिन महत्त्वपूर्ण है। स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु बच्चों पर ध्यान देना होगा। ज्ञानशाला भी संस्कार-निर्माण की दृष्टि से उपयोगी उपक्रम है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करते हुए उसकी विभिन्न धाराओं का विश्लेषण किया और कहा--'हमारी साधना जागरूकता के साथ आगे बढ़ती रहे। छोट-छोटे साधु-साध्वियों में ज्ञान, विनय एवं श्रम के संस्कारों का निर्माण हो। इनको तैयार करने में बड़े साधु-साध्वियां अपने समय का नियोजन करें। मर्यादा हमारा रक्षा-कवच है, शरण, त्राण व प्राण है। संघ व संघपति के प्रति आस्था का भाव बनाए रखें।' संघनिष्ठा के संदर्भ में आचार्यवर ने प्रसंगवश मुनि जिनेशकुमारजी एवं साध्वी स्वर्णरेखाजी आदि साध्वियों का विशेष उल्लेख किया।

हाजरी वाचन के दौरान धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखा की भूमिका के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'हमारे धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखा भी एक होती है। कोई दो-चार-पांच साध्वीप्रमुखा नहीं होतीं। साध्वियों की संख्या अभी पांच सौ से अधिक है। चाहे साध्वियां कितनी भी क्यों न हों, साध्वीप्रमुखा एक ही होती है। आचार्यों के अनुशासन की छत्रछाया में साध्वियों की देखरेख का दायित्व साध्वीप्रमुखा पर होता है। वैसे तो अन्तिम निर्णय आचार्य का होता ही है। यह हमारे धर्मसंघ की सुन्दर व्यवस्था है। वर्तमान में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी हैं। इन्होंने आचार्य तुलसी के समय में कार्य संपादन किया, आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में किया और अब हमारे पास भी कर रही हैं। मर्यादा महोत्सव के अवसर पर साध्वियों की व्यवस्था में इनका कितना समय व श्रम लगता है। वर्षों से वे साध्वियों की देखरेख व चित्तसमाधि के क्षेत्र में आचार्यों का सहयोग कर रही हैं।'

आचार्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर कोल्हापुर निवासी निखिल पगारिया ने आज पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश किया।

आचार्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात जीवनविज्ञान दिवस के संदर्भ में मंत्री मुनिश्री का विशेष वक्तव्य हुआ। शासनश्री मुनि किशनलालजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'जीवनविज्ञान प्राचीन व नवीन शिक्षा का आदर्श उपक्रम है। सही मुद्रा, सही श्वास, सही नींद व सही सोच विद्यार्थियों के जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं। जीवनविज्ञान जीवन जीने की कला है। इसके माध्यम से बच्चों में परिवर्तन घटित हुआ है।' मुनिश्री ने विद्यार्थियों को जीवनविज्ञान के प्रयोगों का अभ्यास करवाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

रात्रि में जसोल तेरापंथ समाज की एक विशेष संगोष्ठी पूज्य आचार्यवर की सन्निधि में संपन्न हुई। कई वक्ताओं की विचार प्रस्तुति के बाद आचार्यवर ने समागत जिज्ञासाओं का समाधान किया और समसामयिक उपयोगी शिक्षा भी प्रदान की।

आज प्रातः आचार्यप्रवर ने जसोल निवासी **श्री सोहनलालजी बुरड़** की तपस्याओं का उल्लेख करते हुए उन्हें **'तपोनिष्ठ श्रावक'** के संबोधन से संबोधित किया।

जसोल रावले में पदार्पण

२७ नवम्बर। आज प्रातः आचार्यप्रवर जसोल नगर से संलग्न पहाड़ी पर स्थित रावल किशनसिंहजी के रावले में पधारे। मुख्य द्वार पर रावल साहब ने अपने परिजनों के साथ परम्परागत रूप से पूज्यप्रवर का स्वागत किया। रावले के परिसर में आयोजित समारोह में मुनि जिनेशकुमारजी एवं मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल) ने अपने विचार रखे। रावल किशनसिंहजी ने अपनी मारवाड़ी भाषा में धर्म अन्नदाता का स्वागत किया। उन्होंने अभिनंदन पत्र का वाचन कर उसे आचार्यप्रवर को समर्पित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में मानव को श्रेष्ठ प्राणी बताते हुए कहा--'मानव भव में ही साधना कर परमात्मा की स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है। इस दुर्लभ मानव जीवन को सार्थक बनाएं।' नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'नशे का आदी हो जाने के बाद उसे छोड़ पाना मुश्किल होता है, किन्तु दृढ़ संकल्प व त्याग के बल पर वह छूट सकता है।' आचार्यप्रवर की प्रेरणा से मेवानगर के ठाकुर विशनसिंहजी ने धूम्रपान का परित्याग किया। अन्य लोगों ने भी कई त्याग-प्रत्याख्यान किए। रावल परिवार के श्री गंभीरसिंहजी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम के बाद रावल परिवार के कई घरों में आचार्यप्रवर के चरण टिके। सबके मन में अच्छा उत्साह परिलक्षित हुआ। आचार्यप्रवर ने रावले में गोचरी भी की।

वीतराग समवसरण में आज आयोजित मंगलभावना समारोह का प्रारंभ कन्यामंडल द्वारा प्रस्तुत गीत से हुआ। मुनि मदनकुमारजी, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री जसराज बुरड़, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती फेनादेवी भंसाली, तेयुप के मंत्री श्री जितेन्द्र सालेचा, ज्ञानशाला से जुड़े श्री सुरेन्द्र सालेचा व सरिता चोपड़ा ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। सिवांची-मालाणी की साध्वियों ने समूह गीत का संगान किया। श्री मुकनचन्द मेहता ने श्री लालूलाल छाजेड़ द्वारा प्रस्तुत 'भिक्षु भक्तिभावित भावना' नामक पुस्तक पूज्यवर को भेंट की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'राग-द्वेष की उपस्थिति में कर्म का बंधन होता है। राग-द्वेष व्यक्ति की चेतना को मलिन बनाने वाले तत्त्व हैं। राग-द्वेष मुक्ति की अवस्था अध्यात्म की अवस्था है। साधु सदैव राग-द्वेष से मुक्ति की साधना में संलग्न रहते हैं। मोहकर्म की प्रबलता से व्यक्ति राग-द्वेष में चला जाता है। समत्व के अभ्यास से वीतरागता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। वीतरागता ही साधना का लक्ष्य होना चाहिए। वीतरागता मुख्य है, सम्प्रदाय गौण है। सम्प्रदाय साधना का एक माध्यम बन सकता है। हम सब साधना के द्वारा वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ते रहें।'

सम्मान समर्पण समारोह

मध्याह्न में पूज्यवर की सन्निधि में जैन विश्वभारती द्वारा प्रवर्तित एवं एम.जी.सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता द्वारा प्रयोजित दो सम्मान समर्पित किए गए। **महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा सम्मान** डा.अनुपम जैन (इन्दोर) तथा **गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार** प्रो. कुसुम जैन (जयपुर) को प्रदान किया गया। जैविभा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री हेमन्त नाहटा ने अभिनंदन पत्र का वाचन करते हुए आभार प्रकट किया। जैविभा के सहमंत्री श्री जीवनमल मालू ने स्वागत भाषण किया और अभिनंदन पत्र व स्मृतिचिह्न के साथ एक लाख की पुरस्कार राशि का चैक डा.अनुपम जैन एवं प्रो.कुसुम जैन को प्रदान किया।

उल्लेखनीय है--श्री अनुपम जैन अच्छे गणितज्ञ हैं। उनके ६५ शोधपत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने तेरह पुस्तकों का लेखन व दस से अधिक अभिनंदन ग्रंथों का संपादन किया है। जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संचालित जैन गणित शोध परियोजना के कार्य में संलग्न हैं। प्रो. कुसुम जैन जैनदर्शन की विदुषी हैं। कई स्थानों पर उन्होंने जैन दर्शन पर व्याख्यान और प्रशिक्षण दिए हैं। वे एक शिक्षाविद् भी हैं। दोनों सम्मान प्राप्तकर्ताओं ने अपना स्वीकृति भाषण दिया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। रात्रि में भी मंगलभावना का कार्यक्रम चला।

संबोधन-अलंकरण

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इन श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा-भक्ति का उल्लेख करते हुए उन्हें विशिष्ट संबोधन से संबोधित किया है--

श्रद्धानिष्ठ श्रावक

१. श्री खूबचन्द भंसाली	जसोल	७. श्री डूंगरचन्द वडेरा	जसोल
२. श्री बाबूलाल बोकड़िया	जसोल	८. श्री महेन्द्र तातेड़	जसोल
३. माणकचन्द सालेचा	जसोल	९. स्व.श्री चन्दनमलजी बुरड़	जसोल
४. श्री सुरेशकुमार भंसाली	जसोल	१०. श्री छगनराजजी पालगोता	टापरा
५. श्री गौतमचन्द भंसाली	जसोल	११. श्री पारसमल संकलेचा	पचपदरा
६. श्री मीठालाल सालेचा	जसोल	१२. श्री किशनजी डागलिया	कोशीवाड़ा

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

१. श्रीमती बदामीदेवी बाफना	बालोतरा	१३. श्रीमती मंजुदेवी भंसाली	जसोल
२. श्रीमती पानीदेवी वडेरा	बालोतरा	१४. श्रीमती लीलादेवी सालेचा	जसोल
३. श्रीमती मांगीदेवी भंसाली	बालोतरा	१५. श्रीमती सुशीलादेवी वडेरा	जसोल
४. श्रीमती इन्द्रादेवी सालेचा	बालोतरा	१६. श्रीमती सुन्दरदेवी तातेड़	जसोल
५. श्रीमती भंवरीदेवी तलेसरा	जसोल	१७. श्रीमती सरोजदेवी तातेड़	जसोल
६. श्रीमती अणचीदेवी गोलछा	जसोल	१८. श्रीमती सरजूदेवी सालेचा	जसोल
७. श्रीमती विमलादेवी भंसाली	जसोल	१९. श्रीमती प्यारीदेवी मांडोतर	जसोल
८. श्रीमती कमलादेवी बोकड़िया	जसोल	२०. श्रीमती सुखीदेवी चौपड़ा	पचपदरा
९. श्रीमती पुष्पादेवी सालेचा	जसोल	२१. श्रीमती भीखीदेवी चौपड़ा	पचपदरा
१०. श्रीमती जसोदादेवी भंसाली	जसोल	२२. श्रीमती शांतिदेवी संकलेचा	पचपदरा
११. श्रीमती सुशीलादेवी भंसाली	जसोल	२३. श्रीमती मोतीदेवी डागलिया	कोशीवाड़ा
१२. श्रीमती मोहिनीदेवी संकलेचा	जसोल	२४. श्रीमती मीनादेवी डागलिया	कोशीवाड़ा

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 1-12-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

२५. श्रीमती मांगीदेवी ढेलड़िया	समदड़ी	२८. स्व.श्रीमती सुन्दरदेवी पालगोता	टापरा
२६. श्रीमती मांगीदेवी पालगोता	टापरा	२९. स्व.श्रीमती कमलादेवी चौपड़ा	पचपदरा
२७. श्रीमती बदामीदेवी वडेरा	टापरा	३०. श्रीमती मूलीदेवी वडेरा	जसोल

तपोनिष्ठ श्राविका

१. श्रीमती दिवालीबाई बुरड़ बालोतरा

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक लाला नेमचन्द जैन (उकलाना-गुड़गांव) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र रघुवीर, बलराज, प्रवीण, संजय, सुपौत्र नितिन, चेतन जैन, द्वारा-मार्बल ग्रुप।

३१००/- स्व. श्रीमती मोहनीदेवी सेठिया (धर्मपत्नी-स्व. श्री सागरमलजी सेठिया, बीदासर-दिल्ली) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र मांगीलाल, राजकुमार-सरिता, सुरेन्द्र-रश्मि, सुपौत्र व पौत्रवधू निर्मल-शिखा, विनीत-नम्रता, नवनीत, ऋषभ व अक्षय सेठिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. मदनलालजी संचेती (गुड़ारामसिंह-चेन्नई) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पादेवी, सुपुत्र विमलकुमार, कमलकुमार संचेती द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. भंवरलालजी चुन्नीलालजी चोरड़िया (चारभुजा) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र संपतलाल, प्रकाशचन्द, सुपौत्र विजय, दीपेश, नीतेश चोरड़िया, द्वारा-मीनाक्षी हार्डवेयर एवं वैशाली टेक्सटोरियम, बाकोला-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री चांदमलजी गोखरू (सुपुत्र-स्व. गणेशलालजी गोखरू, आसीन्द-मुम्बई) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीलादेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू मुकेश-उषा, सुपौत्री खुशी गोखरू द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. गौरव (प्रपौत्र श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री भैरूंलाल व श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती फूलीबाई, सुपौत्र संपतलाल-चंचलदेवी, सुपुत्र-कमलेशकुमार-लीला, दीवेर-मुम्बई-पूना) की १७वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में उनकी बहन शेजल द्वारा प्रदत्त।

भूल सुधार

विज्ञप्ति क्रमांक ३४ में पृष्ठ ४ पर 'आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह का शिलान्यास' शीर्षक में दूसरी पंक्ति में उल्लिखित महाप्रयाण दिवस को जन्मदिवस पढ़ें।

आदर्श साहित्य संघ का शिविर कार्यालय यात्रा में हर मंजिल पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की सेवा में है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा,
पो. टापरा-३४४ ०२३ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**